देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
8.642

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 361-365

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार

जे. अशोक कुमार जैन, शोधार्थी
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, शोध निर्देशिका एवं असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ सॉइंस टेक्नोलॉजी एंड एडवांस स्टडीज (विस्टास), चेन्नई।

शोध सार :

हर व्यक्ति का जीवन जीने का ढंग अलग–अलग होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने दृष्टिकोण और मानदंडों के अनुसार जीवन जीता है। दृष्टि तो सभी के पास होती है, किंतु सही दृष्टि बहुत कम लोगों में देखने को मिलती है। दूरदर्शी व्यक्तियों में गहन विचारों का प्रवाह मिलता है। इसी तर्ज पर, आदरणीया डॉ. विद्या बिंदु सिंह ने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक जिम्मेदारियों को साहित्य का मुख्य विषय बनाया और समाज को सामाजिक चेतना से परिपूर्ण श्रेष्ठ साहित्य प्रस्तुत किया।

डॉ. सिंह ने कहानीकार, उपन्यासकार, कवयित्री एवं लोक–साहित्य की मर्मज्ञ के रूप में बहुमुखी पहचान बनाई। 'आदर्श स्त्री', 'भारतीय नारी' और 'ममतामयी माँ' जैसे विभिन्न रूपों में उनका सशक्त चित्र सामने आता है। साहित्य के किसी भी रूप में उन्होंने स्पष्ट दृष्टि और जिम्मेदार सामाजिक सरोकारों को प्रमुखता से व्यक्त किया। उनकी रचनाएँ पीड़ा, यातना और व्यक्तिपरक संघर्षों का सजीव चित्रण हैं, जिनमें भाषा और भावनाओं की अभिव्यक्ति स्वाभाविक और प्रभावशाली है।

मूल शब्द : साहित्य, जीवन, समाज, लोक–साहित्य, सामाजिक सरोकार, भारतीयता, सामाजिक चेतना, सामाजिक सामंजस्य, लोक–संस्कृति।

डॉ. विद्या बिंदु सिंह की प्रमुख कहानियाँ जैसे बनदेई, बकरी के लोग, अपनी जमीन, वे डोलत रस आपने, काशीवास आदि न केवल समाज के प्रति उनकी गहन चिंता को दर्शाती हैं, बल्कि सामाजिक बदलावों के संवाद को भी उजागर करती हैं। उपन्यास–संग्रह हिरण्यगर्भ में पाँच नारी–केंद्रित उपन्यास सम्मिलित हैं, जो नारी–विमर्श के विविध आयामों को केन्द्र बिंदु बनाकर लेखनी की गई हैं। यह साहित्य सामाजिक समस्याओं की पहचान के साथ समाधान की जटिलताओं को भी संवेदनशीलता से दर्शाता है।

सामाजिक सरोकारों का स्वरूप :

डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में गाँव की संस्कृति, लोक परंपराएँ और भारतीयता के साथ शहरीकरण, परिवार की टूटन और पीढ़ीगत संवाद का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। वे अपने पात्रों के माध्यम से समाज में आपसी संवाद, सहृदयता, सामंजस्य और संवेदना की प्रेरणा प्रदान करती हैं। इससे बदलते हुए सामाजिक

परिवेश का जीवंत और व्यापक चित्र उभरकर सामने आता है।

नारी चेतना और संघर्ष :

डॉ. सिंह की कहानियाँ नारी को करुणा, शक्ति और ममता की जीवंत प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी नायिकाएँ सिर्फ सहारा पाने वाली नहीं, बल्कि सोच, निर्णय और नेतृत्व प्रदान करने वाली पात्र होती हैं, जो परिवार, समाज और व्यक्तित्व के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करती हैं। उनकी रचनाएँ नारी के संघर्ष, स्वावलंबन और सामाजिक भूमिका पर एक नई दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।

आपने एड़ियही काकी कहानी के माध्यम से समाज में बहिष्कृत लोगों को ध्यान देकर आपने जब अस्पर्शीय विषय को भी अपनी कलम का विषय बनाया, जिसे पढ़कर सभी को शांति मिली। वास्तव में "हमें मरीज लोगों से घृणा नहीं" अपितु प्यार करना चाहिए।" इस कहानी के माध्यम से लेखिका समाज को यह संदेश पहुँचना चाहते हैं कि सामाजिक चेतना और सामाजिक समरसता से परिपूर्ण रहती है।

"हम तुम्हें गले से भी नहीं लगा सकतेद्य हमारी बहू हमारी सेवा करती है, रात दिन हमारे साथ रहती है लेकिन हमें तो यह बीमारी नहीं लगी। बेटी! भगवान ने हमारा बेटा छीन लिया। तुम हमारे लिए दुआ करना कि हमारी बहू स्वस्थ हो जाए, उनके बच्चों को यह बीमारी न लगे। बिटिया! क्या सचमुच छूने से यह बीमारी लग जाती है?"[1]

इस कहानी में आपने एड़स पीड़ित परिवार को सरल शब्दों में दर्शाया है, जिसे समाज बहिष्कृत कर देता है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका जी बताना चाहते है कि छूने से एड़स नहीं होता।

काशीवास कहानी संग्रह में वरिष्ठ नागरिकों के प्रति संवेदना एवं नारी संवेदना का मर्म दर्शाया गया है। इन कहानी संग्रह में स्त्री विमर्श अपने अलग ढंग का है। वह नारी मुक्ति के लिए नहीं अपितु वह नारी शक्ति का बोध समाज को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। इन कहानियों में नारी की अदम्य साहस और सहनशीलता का उल्लेख देखने को मिलता है। वह विषम परिस्थियों में भी टूटती, बिखरती नहीं बल्कि दुःख को अपनी शक्ति बनाकर स्वयं खड़ी रहती है और दूसरों का भी सहारा बनती है। वह पुरुष की प्रतिद्वंद्वी नहीं पूरक हैं। वह सबसे पहले माँ है, फिर कुछ और।

इन कहानियों में गाँव से शहर आए व्यक्ति का अन्दर्द है शहर में बहुत नहीं कर पाते हैं वापिस चले आते हैं। आज भी कुछेक गाँवों की कहानियाँ बहुत संवेदना पूर्वक हैं। जहाँ मोह, ममता और आत्मीयता आज भी कायम है। डॉ. विद्या विंदु सिंह की कहानियाँ भारतीय परंपरा और विरासत के पुनरावलोकन की आवश्यकता पर बल देती है और लोगों को जाग्रत भी करती है।

लेखिका ने प्रस्तुत कहानियों के माध्यम से सामाजिक सभी समस्याओं को संवेदनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। ये कहानियाँ वास्तव में व्यक्ति को सोचने के लिए विवश करती है।

प्रताप सिंह के तब तक कोई नहीं संतान नहीं थी। उनकी पत्नी की आँखों में ममता की झलक देखकर मंगलू उनके पैरों पर झुक गया। "पाँव लागूँ मालकिन।" पति पत्नि दोनों के सुख से एक साथ निकला, "मालकिन नहीं, माँ कहो मंगलू।"[2]

बारी–बारी–विद्या विंदु सिंह की 21 कहानियों में एक है, यह कहानी वास्तव में यथार्थता पूर्ण कहानी है। सच्ची घटित घटना जैसे हमें अनुभूती होती है पढ़ते वक्त। आज मध्यम वर्गीय तथा कथित अभिजात वर्ग की

कहानी है यह। इसी बात की पुष्टिकरण करते हुए सभ्य समाज कहे जाने वाले लोगों का आपने अच्छा ही चित्रण किया है। बिटिया किन्नी की मनोदशा को यथार्थवत चित्रण किया गया है। कहानी में छपी फोटो को देखने से लगता है कि जैसे आपने भोगा है आपने ही जिया या देखा है। इस जिन्दगी को जितनी सराहना की जाये उतना ही कम है।

"आपकी बहू के साथ वह भी किटी पार्टी में गयी हैं। अभी घर के काम से उन्हें फुरसत नहीं मिली। काम खतम करके नहा धोकर पूजा पाठ करती है। तब पानी पीती है बड़ी धर्मात्मा है। पर बाबूजी अच्छे लोगों को ही दुःख क्यों उठाना पड़ता है।"[3]

बनदेई कहानी संग्रह में उनके सुख–दुख की कथा है जो समाज में कोई विशिष्ट स्थान या नाम नहीं रखते। जन्म लेते हैं कर्मभूमि में भूमिका निभाते हैं और चुपचाप संसारा छोड़ देते हैं। न उनकी यशगाथा लिखी जाती है, न अभिनंदन होता है। पर साधारण में भी असाधारण और उदात्त चरित्र के हैं भटके हुए राह पाकर हताश के अंधेरों में प्रकाश के किरण बन चुके हैं।

बनदेई की माँ दुःखी होकर जिंदगी की ठिकाने के बारे में बताते हुए कहती है कि हम दोनों के बाद तुम इसके सहारे रहेगी। यह तो सोच। बनदेई माँ को प्यार से समझाते हुए कहती है कि :

"देखो माई! तुम नानी का सहारा थी और नानी तुम्हारा। अब मैं तुम दोनों का सहारा हूँ। जब तक तुम दोनों हो, तुम्हारा मुझे भी है। आगे भगवान तो सबका सहारा है। क्या उस समय भगवान ने सहारा नहीं दिया था, जब मुझे जंगल में मरने को फेंक दिया गया था?"[4]

इस लघु कथा के माध्यम से बनदेई की आशा सार्थक बहुत स्पष्ट उल्लेख के रूप में बताया गया है जिसका उदाहरण हम भी देख चुके हैं।

बनदेई– मुख्य संदेश : समाज और परिवार की परंपराओं का सम्मान करते हुए उन्हें समझदारी और सहिष्णुता से बदलना आवश्यक है ताकि सामाजिक सामंजस्य और मानवता बनी रहे।

विद्या बिंदु सिंह की नवीनतम कृति सड़क पर उगते बच्चे इस लघु कथा में लेखिका जी ने लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति के साथ–साथ सामाजिक सरोकार विषय को छूते हुए बड़े सरल एवं सुबोध शैली में अपने विषय की स्पष्टीकरण की है। आजकल लोगों को लंबी कविताएं एवं उपन्यास को पढ़ने के लिए समय बहुत कम है। अतः लोगों को ध्यान में रखते हुए शनि का हो इकू त्रिशूल एवं कैप्सूल कविताएं बहुत प्रभावित होने लगा है। इस लघु कथा में कभी–कभी पूरे जीवन का सत्य उजागर किया गया है इसमें जो मुसीबत के समय को पार करने की शक्ति एवं क्षमता दी गई है तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल करने का हौसला भी बढ़ाया गया है जैसे जीवन की छोटी–छोटी घटनाएं जीवन की दिशा को परिवर्तित कर देती है। इस तरह सहेज संवेदना से भरपूर खांसी हुई है यह लघु कथाएं हैं लेखिका जी ने इसमें प्रस्तुत की है कि जीवन की यथार्थ से रूबरू होती है। जीवन के मुख्य पहलुओं को स्पर्श करते हुए सक्षम के लिए अनेक बिंदुओं को अपनी कहानी का विषय वस्तु बनाया है। सेवानिवृत्ति लघु कथा के माध्यम से जीवन की आशा सार्थ बहुत स्पष्ट उल्लेख के रूप में बताया गया है जिसका उदाहरण हम नीचे भी देख सकते हैं :–

"कल से जो शून्य जीवन में आने वाला है उसे मैं भयभीत हूं रात दिन परिवार की खिचखिच में रहना ना गाड़ी ना बांग्ला ना चपरासी ना ड्राइवर ना माली इन दिनों से इतनी सुविधाओं का आदि हो गया हो कि इन

सबके बिना जीना पड़ेगा सोचकर भी डर लग रहा है अब मैं ज्यादा दिन नहीं जी पाऊंगा।"[4]

यह उपर्युक्त कथन सड़क पर बच्चे सेवानिवृत्ति कहानी से लिया गया है।

मुख्य संदेश : ससुराल में बहू का आत्मसम्मान और स्वतंत्रता भी उतनी ही आवश्यक है जितनी घर की शांति और एकता। संबंधों में संवाद, पारदर्शिता और स्त्री–सशक्तिकरण की जरूरत को लेखिका मार्मिक ढंग से उजागर करती हैं।

पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते उनके साहित्य में परिवार की विडंबनाएँ, वृद्धजनों की उपेक्षा और पीढ़ियों के बीच मनोवैज्ञानिक द्वंद्व का सूक्ष्म चित्र मिलता है। ये सभी तत्व बदलते समाज के दर्द और आवश्यकता की बारीक समझ की अभिव्यक्ति हैं। आधुनिक जीवन में उपभोक्तावाद, रिश्तों की दरार और ग्रामीण–शहरी जीवन के संघर्ष उनके साहित्य के प्रमुख सामाजिक सरोकार हैं।

1. "जीवन की कठिनाइयां यदि मन की शक्ति और प्रेम से जीती जाएं, तो वही व्यक्ति समाज के लिए सच्ची प्रेरणा बन जाता है।"[5] कहानी यह सिखाती है कि शारीरिक या सामाजिक बाधाएं इंसान की क्षमता को रोक नहीं सकतीं, बल्कि प्रेम, धैर्य और संकल्प से वह अपने और दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।–सुगनी कहानी का मुख्य उद्देश्य है।

युद्ध विराम – मुख्य संदेश : विवाद और संघर्ष के बाद शांति, सहिष्णुता और मानवता की स्थापना आवश्यक है, जो समाज और जीवन को स्थिर बनाती है।

पुजारिन अइया–मुख्य संदेश : सामाजिक और पारिवारिक जीवन में भावनात्मक जुड़ाव, सहिष्णुता और समझदारी से ही सच्ची सामंजस्य और शांति स्थापित हो सकती है।

कुआँ–मुख्य संदेश : सामाजिक और पारिवारिक जीवन में सम्मान, समझदारी और सहिष्णुता बनाए रखना आवश्यक है ताकि रिश्तों में स्थिरता और मानवता बनी रहे।

बाघ बाबा का चौराह–मुख्य संदेश : सहिष्णुता, सम्मान और समझदारी से समाज और परिवार के रिश्तों को मजबूत बनाकर स्थिरता एवं शांति को स्थापित करना आवश्यक है।

सेवानिवृत्ति–मुख्य संदेश : जीवन के सेवानिवृत्ति के चरण में आत्मावलोकन, सामाजिक और पारिवारिक संबंधों का पुनर्मूल्यांकन, समझदारी और सहनशीलता से जीवन को संतुलित एवं सार्थक बनाना आवश्यक होता है।

लोक–संस्कृति और समयानुकूलता :

डॉ. सिंह ने लोकगीत, अवधी भाषा और स्थानीय संस्कारों के माध्यम से समाज को उसकी जड़ों से जोड़ने का प्रयास किया है, साथ ही वर्तमान समय की सामाजिक चुनौतियों और बदलावों को भी अपनी रचनाओं में समेटा है। उनका साहित्य नारी सशक्तिकरण, ग्राम–नगर संबंध और मानवता की मूलधार की कालानुकूल व्याख्या प्रस्तुत करता है।

यहाँ डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार के लिए सबसे महत्वपूर्ण 5 संकेत बिंदु प्रस्तुत हैं : डॉ. विद्या बिंदु सिंह ने अपनी लेखनी से सामाजिक जिम्मेदारियों और यथार्थों को साहित्य का मुख्य विषय बनाया।

1. उनका साहित्य नारी चेतना, ग्रामीण संस्कृति, परिवार के बदलते संबंध और सामाजिक संवाद पर केंद्रित

है।

2. उनकी कहानियों और उपन्यासों में नारी को संघर्षशील, सशक्त और निर्णयकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. परिवार में पीढ़ीगत द्वंद्व, वृद्धजनों की उपेक्षा और आधुनिकता के प्रभाव उनके साहित्य के प्रमुख सामाजिक विषय हैं।
4. लोक संस्कृति और समयानुकूलता के समन्वय से उनका साहित्य समाज के जीवंत और बदलते परिवेश को दर्शाता है।

डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार नारी चेतना, ग्रामीण संस्कृति, परिवार के बदलते संबंध, और सामाजिक संवाद जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक रूप से केंद्रित हैं। उनकी लेखनी न केवल सामाजिक यथार्थ की स्पष्ट अभिव्यक्ति करती है, बल्कि समाज परिवर्तन और संवेदनशीलता की प्रेरणा भी देती है। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी अपनी प्रासंगिकता और प्रभावशीलता बनाए हुए है। आधुनिक हिंदी साहित्य में गद्य एवं पद्य के क्षेत्र में विद्या बिंदु सिंह के रूप में एक अमूल्य रतन की प्राप्ति हुई है।

हिंदी साहित्य में इनका योगदान सराहनीय है। इसी तरह गद्य एवं पद्य की रचना के रूप में नई दिशा में आने वाले युवकों के लिए यह प्रेरणा देते रहेंगे। समाज को नई दिशा निर्देशित करते रहेंगे। उपर्युक्त कथन से हमें अवगत होता है कि जिस प्रकार डॉक्टर विद्या बिंदु सिंह सामाजिक पहलुओं को लेकर चिंतन मनन किया है। समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनी है। इस तरह हमें भी अपने कर्तव्यों को समझ कर समाज के लिए भरपूर तन मन से सेवा करनी चाहिए। यही हमारे जीवन का सबसे बड़ा धर्म है और हमें इन साहित्याओं को अपनाकर जीवन को सफल एवं सक्षम बनाना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. विद्या विंदु सिंह, एड़ियही काकी, विद्या विंदु सिंह की 21 कहानियाँ, कल्पना प्रकाशन (2022), पृ.–40
2. विद्या विंदु सिंह, मंगलू, काशीवास प्रथम संस्करण (2012), ग्रंथ अकादमी, पृ.–97
3. विद्या विंदु सिंह, बारी–बारी, विद्या विंदु सिंह की 21 कहानियाँ, (2022), पृ–96
4. विद्या विंदु सिंह, बनदेई, प्रतिभा प्रतिष्ठान (2007), पृ.सं–40
5. विद्या विंदु सिंह, सेवानिवृत्ति, सड़क पर उगते बच्चे, दिव्यं प्रकाशन (2014), पृ. 149.